International Journal of Global Science Research
Vol. 11, Issue. 2, October 2024, pp. 2478-2479
Available Online at www.ijgsr.com
© Copyright 2014 | ijgsr.com | All Rights Reserved
ISSN: 2348-8344 (Online)
DOI: https://doi.org/10.26540/ijgsr.v11.i2.2024.283

Research Paper

बघेल शासकों के कार्यकाल में बघेलखण्ड का विकास

सृष्टि पाण्डेय[1*], एवं मो. स्वालकीन खान[2]
[1*]इतिहास विभाग, पंडित शंभूनाथ शुक्ला विश्वविद्यालय, शहडोल, मध्यप्रदेश
[2]इतिहास विभाग, शासकीय स्नातकोत्तर नेहरु महाविद्यालय, बुढ़ार, शहडोल, मध्यप्रदेश
*Corresponding author Email: dasmrinal09@gmail.com

Received: 02/09/2024
Revised: 14/09/2024
Accepted: 29/09/2024

सारांश "बघेलखण्ड" मध्य पूर्व क्षेत्र का विशाल रियासत रहा है। यहाँ पर सोलंकी राजपूत वंश की एक शाखा 'बघेल' राजवंश का शासन था। जिन्होंने इस क्षेत्र के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, धार्मिक तथा ऐतिहासिक क्षेत्र में अमिट प्रभाव प्रतिस्थापित किया। बघेल वंशावली में अनेक प्रतिभाशाली बुद्धिमान शासकों ने राजकाज संभाला।

प्रस्तावना –

"बघेलखण्ड" एक ऐतिहासिक सांस्कृतिक क्षेत्र है। जिसकी प्रारंभिक राजधानी "गहोरा" था। कुछ समय पश्चात् "बांधवगढ़" राजधानी के रूप में अस्तित्व में आया। बघेल शासक "बाँधवेश" कहलाना अपना गर्व मानते थे। तत्पश्चात् "रीवा" को राजधानी बनाया गया। मुगलकाल से ब्रिटिशकाल तक "रीवा" बघेलों की राजधानी थी। वर्तमान में यह मध्यप्रदेश का जिला तथा संभाग है। यह विन्ध्य क्षेत्र के अंतर्गत आता है।

बघेलों की उत्पत्ति चालुक्यवंशीय शासकों से मानी जाती है; जो गुजरात के क्षेत्र में शासन किए। उन्हें सोलंकी राजपूत कहा जाता था। मध्यकाल में यह लोग पूर्वी मध्यप्रदेश में आकर बस गए। कई वर्षों तक इस क्षेत्र में उनका शासन रहा।

बघेलखंड क्षेत्र का उल्लेख पुराणों में रेवोत्तर या रीवा खंड क्षेत्र के रूप में मिलता है. यह क्षेत्र पर्वतों और घने जंगलों से घिरा हुआ था और इसे तरिहार, उपरिहार, और दहर नाम से तीन भागों में बांटा गया था. वर्तमान समय में बघेलखंड क्षेत्र में मध्य प्रदेश के रीवा, सतना, सीधी, सिंगरौली, उमरिया, और शहडोल जिले शामिल हैं। यहाँ की कला और संस्कृति बहुत समृद्ध थी, प्राचीन काल में इस भूमि पर लगभग 12वीं शताब्दी तक करचुली राजा का आधिपत्य था। करचुली राजा ने सुंदर मंदिर और मठ बनवाए। बाद में बघेल राजा के शासनकाल में कई सुंदर भवन, मंदिर आदि बनवाए गए।

उद्देश्य –

"बघेलखण्ड" के बघेल शासकों की वंशावली को क्रमबद्ध प्रस्तुत करना इस शोध कार्य का प्रमुख उद्देश्य रहा है। बघेलों की संस्कृति और उनके शासनकाल में हुए विकास कार्यों को जनमानस तक पहुँचाने का प्रयास इस शोध के द्वारा किया गया है।

सीमांकन –

यह शोध कार्य बघेलखण्ड क्षेत्र की रियासत के सम्पूर्ण क्षेत्र को लेकर किया गया है; जिसमें बाँधवगढ़ का अध्ययन महत्वपूर्ण तो रहा ही है

International Journal of Global Science Research
Vol. 11, Issue. 2, October 2024, pp. 2478-2479
Available Online at www.ijgsr.com
© Copyright 2014 | ijgsr.com | All Rights Reserved
ISSN: 2348-8344 (Online)
DOI: https://doi.org/10.26540/ijgsr.v11.i2.2024.283

साथ ही पूर्व सम्पूर्ण विन्ध्यप्रदेश एवं वर्तमान रीवा को शोध कार्य में सीमांकित किया गया है।

उपकरण –

इस शोध–पत्र में उपकरण के लिए स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है। साथ ही बघेल साहित्य एवं इससे संबंधित रचनावली का अध्ययन भी शामिल है।

शोध प्रविधि –

शोध वस्तु की साहित्यिक विधा का साक्ष्य एवं प्रामाणिकता के साथ गहन अध्ययन किया गया है।

परिकल्पना –

प्रस्तुत शोध में निम्नलिखित परिकल्पना है

1. "व्याघ्रदेव" को बघेलों का आदिपुरुष माना गया है।
2. मार्तण्ड सिंह बघेल वंश के अंतिम शासक थे।
3. बघेलों की क्रमबद्ध वंशावली की सूची।

1.

बघेलों की वंशावली का परिचय –

शोध कार्य में व्याघ्रदेव, करणदेव, सोहागदेव,2. सारंगदेव, विलासदेव, भीसलदेव, अनिकदेव,3. वलनदेव, दलकेश्वरदेव, मलकेश्वरदेव, ठरियारदेव, बल्लारदेव, सिंहदेव, भैरमदेव4. (वीरमदेव), नरहरिदेव, भीरदेव (भैदचँन्द्र),5. शालिवाहन देव, वीरसिंह देव, वीरभानु, रामचन्द्र, वीरभद्र, विक्रमादित्य, अमरसिंह, अनूप सिंह, भाव सिंह, अनिरुद्ध सिंह, अवधूत सिंह, अजीत सिंह, जय सिंह, विश्वनाथ सिंह, रघुराज6. सिंह, वेंकटरमण सिंह, गुलाब सिंह एवं मार्तण्ड7. सिंह आदि बघेलखण्ड शासकों की वंशावली का विस्तृत उल्लेख किया गया है। शोध–पत्र के माध्यम से बघेली वंशज राजाओं की वंशावली का विस्तृत उल्लेख किया जाना संभव नहीं था; जिसके कारण यहां वंशावली का नामोल्लेख किया गया है।

निष्कर्ष –

मध्यकाल से लेकर आधुनिक काल तक बघेल शासकों का "बघेलखण्ड" क्षेत्र में शासन रहा। मध्यकाल में मुगलशासकों से उनके अच्छे संबंध थे। ब्रिटिश शासन में उन्होंने अपनी बुद्धिमत्ता का परिचय दिया।

उनके काल में मध्य–पूर्व क्षेत्र में सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्य एवं स्थापत्य कला का अभूतपूर्व विकास हुआ। "बघेली" बोली का साहित्यिक विकास अनवरत रूप से होता गया। इन शासकों के दरबार में प्रसिद्ध लेखक, कवि तथा संगीतज्ञ थे।

संदर्भ सूची –

बघेलखण्ड का सामाजिक एवं आर्थिक इतिहास, विश्व भारती प्रकाशन।
रीवा राज्य दर्पण, जीवन सिंह।
रीवा जिला एक संसाधनीय अध्ययन, सुरेश प्रसाद तिवारी।
रीवा राज्य का इतिहास, बाबू रघुवर प्रसाद।
बघेलखण्ड का स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास एवं स्वतंत्रता संग्राम सैनिकों का इतिहास – श्री ब्रजराज सिंह तिवारी, श्री वीरेन्द्र प्रताप सिंह, डॉ. ब्रजगोपाल शुक्ला
विन्ध्यप्रदेश की डायरी।
दैनिक समाचार, पत्र एवं पत्रिकाएं